भारतीय वैज्ञानिक ने 2014 में ही किया था आगाह

पृथ्वी की धीमी गति से विनाशकारी तबाही संभव

लखनऊ। प्रभात

अभी-अभी कुछ दिन पूर्व अमेरिकी शोधकर्ता ने एक आकड़ा पेश करते हुए दावा किया है, कि वर्ष 2018 में उष्ण कटिबन्धीय इलाकों में विनाशकारी भूकम्प की निरन्तरता से नकारा नही जा सकता है। यहॉ तक इनकी औसतन 50-60 प्रतिशत भूकम्प के आने की संख्या में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आकड़ों से यह भी पता चलता है कि सन् 1900 के बाद 7 या उससे अधिक तीव्र ता वाले भूकम्प की स्थिति के सापेक्ष 2000 तक 15 (प्रन्द्रह) से 20 (बीस) बड़े भूकम्प आने की संख्या पहुॅच चुकी है। रिसर्च में यह भी जिक्र किया गया है कि यह स्थिति पृथ्वी में उसके परिक्रमण गति (रोटेशन) में हल्की कमी के कारण हो सकती है। सामान्य तौर पर पृथ्वी का सूर्य की परिक्रमा के दौरान 24 घण्टे अपनी धुरी पर एक चक्कर काटती है और इसी बीच में चन्द्रमा का बीच में आ जाने से पृथ्वी पर ज्वारीय प्रभाव से समय-समय परिक्रमण गति धीमी हो जाती है।

पिछले वर्ष दिसम्बर 2016 में भी कनाडा की अल्बर्टा युनिवर्सिटी के भौतिकी के प्रोफेसर व शोधकर्ता मैथ्यूडर्बो में भी डवेरी ने भी यह बात

प्रो. भरतराज सिंह, निदेशक एस.एम.एस.

कही थी कि समुद्र के जल स्तर में बढोत्तरी जो ग्लेशियर के पिघलने से लगातार हो रही है, पृथ्वी के घूर्णन गाति में बदलाव पैदा कर रहा है, और गाति धीमी हो रही है, उनका भी यह कहना था कि इससे चन्द्रमा के गुरूत्वीय आकर्षण भी पृथ्वी के घूर्णन को कम करने में अपनी भूमिका निभाता है। उनका कहना था कि 21वीं शदी के अन्त तक 1.7 मिली सेकेण्ड तक एक दिन में गाति धीमी होने के अनुमान है।

प्रदेश के वरिष्ठ पर्यावरणविद् व वैज्ञानिक, डॉ0 भरत राज सिंह जो वर्तमान में महानिदेशक, स्कूल ऑफमैनेजमेन्ट साइन्सेज (एसएमएस), लखनऊ में कार्यरत हैं और डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय में शोधकर्ता हैं, पहले ही आगाह कर चुके हैं कि पृथ्वी के घूर्णनगति में परिवर्तन से शदी के अन्त तक धरती को डगमगाने से कोई रोक नही सकता है, यह उन्होंने अपने ग्लोबल वार्मिंग काजेज इम्पैक्ट एण्ड रेमेडीज में अंकित किया है। प्रो0 सिंह का कहना है कि इसका मुख्य कारण ग्लोबल वार्मिंग से उत्तरी ध्रुव पर जमी बर्फतेजी से पिघल रही है और ग्लेशियर सिकुड रहे है। पिघलने की इस गति से 2040 तक उत्तरी ध्रुव पर नाम मात्र की बर्फ बचेगी। उन्होंने बताया कि देश में समुद्री तटों पर भीषण बारिश व हिमालय से सटे प्रदेशों में बर्फबारी व भीषण ठंड का प्रकोप बढ़ गया है जबकि उत्तर प्रदेश व बिहार में सूखे पड़ने की संभावना बढ़ती जा रही है। उनके इस शोध को, अमेरिका, जर्मनी, कनाडा आदि देशों के शोधकर्ता विवेचना कर आगे बढ़ा रहे हैं।